International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-08-2025, Accepted: 17-09-2025, Published: 03-10-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 3-4

प्रेमचंद के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का महत्व

मल्लिकार्जुन आर
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, मानविक विभाग, कृपानिधि महाविद्यालय, बेंगलूर, कर्नाटक, भारत

सारांश
उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने अपने लेखन में भारतीय ग्रामीण जीवन का जीवंत चित्रण किया है। साहित्य को समाज से जोडने का काम प्रेमचंद ने किया। उन्होने किसानो समस्याओं को अनेक प्रकार से उजागार किया उनके साहित्य में देसी मिट्टी की सुगंध की आसानी से महसूस किया जा सकता है। उन्होने शोषण के जिन तरीकों बताया है वही तरीके आज भी दिखाई दे जाते हैं प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इसी पर विचार किया गया है

मूल शब्दः ग्रामीण जीवन, जमीन्दार के अत्याचार, क्रांतिकारी, विलास, सामाजिक परिवर्तन, अंधविश्वास

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वस्तुत वह समाज का एक अभिन्न अंग है। जन्म से मनुश्य समाज में रहता है। अपने आचार–विचार रहन–सहन,भाषा शैली एवं व्यवहार की आधार पर मनुश्य सामाजिक संबंधों का निर्वाह करता है। मानव के बिना समाज के अस्तित्व की कल्पना ही असंभव है। अतरूमानव और समाज का संबंध अन्योन्याश्रित ह। समाज में रहकर मानव परस्पर सहयोग से अपनी समस्याओं एवं अपदाओं को दूर करने का प्रयत्न करता है। सामाजिक संबंधों की आधार पर ही मनुष्य अपने उद्देशों के पूर्ति में ही लगा रहता है। मनुष्य के स्वभाव एवं विभिन्नता एवं समानता को देखा जा सकता है। इसीके फलस्वरूप मानव के उद्देश, आचार–विचार,संस्कार एवं दृष्टि में परिवर्तन हो जाता है। अतरू हमारा भारत देश एक कृषि प्रधान देश है क्योंकि भारत की ७०% प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर पर निर्भर है और आधी से ज्यादा जनसंख्या गाँवों में निवास करते है। अनेक साहित्यकारों ने ग्रामीण जीवन पर अपनी लेखनी चलाई है। जिनमें प्रेमचंद सर्वप्रथम ऐसे लेखक है, जिन्होने ग्रामीण जीवन को समाज के सामने लाये । प्रेमचंद के ग्रामीण जीवन को अपने साहित्य का विषय बनाया और कृषक के जीवन के दुखों को समाज के सामने लाये । प्रेमचंद का ग्रामीण जीवन से निकट संबंध था । किसानों के प्रति प्रेमचंद ने कोरी बौद्धिक सहानुभूति प्रदर्शित नही की है वरन बड वरन बडे ही यतार्थ ढंग से उसकी दुर्बलताओं,विशेषताओं,और समस्याओं पर्भी प्रकाश डाला है। प्रारंभ से ही वे गाँवों को दृष्टि में रखकर उपन्यास लिखते रहे और गोदान तक आते–आते उनकी दृष्टि ग्रामीण जीवन के प्रत्येक पहलू पर अच्छी तरह प्रकाश डालती है। किसानों से संबंधित उनके निम्नलिखित उपन्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वरदान, सीवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायकल्प और गोदान|

जीवन की व्याख्या के लिए उसके निम्नलिखित विभाग किए है।

1. व्यक्ति किसान
2. आर्थिक स्थिति
3. शोषण
4. किसानों की समस्याओं के निराकरण का मार्ग

जहाँ तक व्यक्ति किसान का सबंध है, प्रेमचंद ने उसकी चारित्रिक अंधविश्वासों तथा उसकी दुर्बलताओं पर स्पष्ट से लिखा है। भारतीय ग्रामीण जनता अंधविश्वासी होती है।, प्रेमचंद ने ग्रामीण जनता के अंधविश्वास का जगह –जगह वर्णन किया है तथा "वरदा में कमला के नाम विराजन के पत्र शीर्षक से सत्रहवे परिच्छेद में कहा है 'हमारे घर के पिछवाडे के एक गडढे में चुडैले नहाने आया करती है और वे राह चलनेवालों से छेडाछेड किया करती है। इसी प्रकार द्वार पर एक भारी पीपल पेड है,वहाँ पीपेल का त्रास सारे जीवन हृदय पर ऐसा छाया हुआ है कि सूर्यास्त होने से मार्ग बंद हो जाता है। "आगे चलकर रंगभूमि में भी ग्रामीण जनता के अंधविश्वास का उल्लेख मिलता है। पूर्वजन्म पर विश्वास बहुत कम पाया जाता है। रंगभूमि का सूरदास पूर्वजन्म पर अटल आस्था रखते है। सुभागी उसके चोरी हुए रुपायों का भेद उसे बता देती है जिस पर सूरदास कहते है कि'मेरे रुपाये ये ही नहीं शायद उस जन्म में मैने गोरों के रुपाये चुराये होंगे[2]

जीवन अनेक थपेडों ने वास्तव में ग्रामीण जनता को भाग्यशाली और पूर्वजन्म का विश्वासी बता दिया है। शताब्दियों से उनका शोषण हुआ है जमीनदार के पांव तले गर्दान दबी होने के कारण अपने अधिकारों तक की मांग करने में डरते है। गोदान के छोटे अनेक स्थलों पर अपनी डरपोक मनोवृत्ति का परिचय देता है।

क्या यह मिलते–झुलते रहने का प्रसाद है कि अब तक जान बची हुई है, नहीं तो कहीं का पता नहीं लगता कि किधर गये।

प्रेमचंद ने ग्रामीण जानता के स्वभाव और जीवन पर जगह–जगह बडे मनयोग से लिखे है। किसान की आर्थिक स्थिति भी उनकी आँखों से ओझल नहीं रहीं।

गोदान कृषक जीवन का महाकाव्य है। होरी का जीवन तत्कालीन भारत के लाखों किसान का जीवन है। प्रेमचंद होरी की सोचनीय आर्थिक दशा का चित्रण करते हुए लिखते है। एक तो जाडे की रात दूसरी माघ के वर्षा । मौत–सा सन्नाटा छाया हुआ था होरी भोजन करते पुनिया के मटर खेत की मेड पर अपनी मडैया में लेटा हुआ था चाहता था शीत को भाल जाए और सो ले लेकिन तार–तार कम्बल फटी हुई थी शीत के झोलों से गीली पुआल इतने शत्रुओं के सम्मुख आने का नींद में साहस न था। भारत के किसानें के सबसे ज्वलंत समस्या ऋण के भोज से मुक्त होने की है। प्रेमचंदकालीन में ही नहीं, बल्कि आज भी अधिकांश किसान महाजनी सभ्याता पाठ के नीचे बुरी तरह से पिस रहे हैं। प्रेमचंद ने बताया है कि इन किसानों के लिए कर्ज वह मेहमान है जो बार–बार आकर जाने का नाम नहीं लेता। गोदान का होरी बहुत कुछ ऋण के भार के कारण ही आजन्म कष्ट उठाते है और अपने जीवन को कष्ट कर देते है।

एक और ऋण का भोज और दूसरी ओर जमीन्दार के अत्याचार। जब तक किसान बडे जमीन्दार के चुंगल से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक उनकी समस्याएँ ।सुलझ नहीं हो सकती। जमीन्दार के बावन हाथ हो जाते है।[3] उनके हाथों में किसानों को किसी न किसी बहाने फंसाने का सामर्थ्य रहता है।

इस प्रकार प्रेमचंद ने किसान वर्ग के जीवन के विस्तुत झांकी अपने उपन्यास में चित्रित की है। किसानों की समस्याओं का सम्यक उदघाटन करने के बाद वे उसके हल का उपाय भी सुलझाते हैं । वास्ताव में किसानों की प्रमुख समस्या आर्थिक समस्या है। जब तक किसान का शोषण बंद नहीं होता तब तक उनकी दशा में कोई सुधार नहीं हो सकता।इसलिए किसान का शोषण करनेवाले वर्ग का नाश होना क्रांतिकारी व्यक्तित्व देखने योग्य है। किसान के हूदय और मस्तिष्क से सर्वप्रथम भय को दूर करना आवश्यक है। तभी वह शोषण का बुलंदी से सामना कर सकते है। दूसरा उनका शिक्षित होना भी अनिवार्य है।

दुनिया के अन्य देशों के किसान आंदोलन की जानकारी मिलते रहने पर भारतीय किसान भी अपाने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकते है। गोदान में धनिया और गोबर व्यक्तित्व भी ऐसा है।

धनिया की स्पष्ट मान्यता है" हमने जमीनदार के खेत जोते है,तो अपना लगान ही लेगा।उसकी खुशामद क्यों करे? उसके तलवे क्यों सहलवे।[4]

प्रेमचंद ने किसानों की मात्र दयनीय दशा का ही चित्रण नहीं किया प्रत्युत उनमें उभरतेहुए क्रांतिकारी विचारों को भी व्यक्त किया है। प्रेमचंद का साहित्य शोषित किसानों को सजग करता है। साथ ही उन्हें अपने अधिकारों को पाने के लिए संगठित होने में प्रेरणा देती है। इससे आंदलनों को बल पहुँचता है।

प्रेमचंद एक ऐसे युग के लेखक है जिसमें शब्द और कर्म में न्यूनतम दूरी होती है ऐसे ही लेखकों को जनता का पर्याप्त सम्मान मिलना है।

प्रेमचंद की आधुनिकता अन्वेषण ही नहीं परिवर्तन भी है। समाज में नयी चेतना के विकास से ही मध्यवर्ग अपनी सामाजिक भूमि का विस्तार कैसे करे, गरीब कृषक राजनैतिक नेतृत्व की अगली कतार में खुद कैसे सामने आये, बुनियादी मानवीय मौल्यों और विस्तार कैसे हो, सामाजिक परिवर्तन की समस्याएँ उनके आधुनिक दृष्टिकोण का विस्तार करती है, आधुनिक को जनजीवन से जोडती है।

प्रेमचंद जी के सभी उपन्यासों में सभी तरह के पात्र है, सभी तरह की समस्याएँ हैं, उनमें शिक्षितो और अशिक्षितों की अपनी–अपनी रीति–नीति और अपनी–अपनी लाल्साएँ हैं। यही कारण है कि सबकी अपनी–अपनी कठिनाइयाँ है। उनमें किसानों और जमीनदार की चर्चा है उनकी संपत्ती, विलास और त्याग, उत्पीडन और उदारता का वर्णन है।उनमें सेवा की महत्ता और क्रांति के विद्रोह का भाव भी है।

ग्रामीण जीवन का चित्रण करने में प्रेमचंद अग्रदूत है। जमीन जोतनेवाला या कुदाली चलानेवाला व्यक्ति शोषण का सबसे अधिक शिकार है। उनकी दरिद्रता और भूख का उन्होने वर्णन विस्तार से किया है।

वह जमीन जोतना, बीज बोता परन्तु जिसका फसल पर कोई अधिकार नहीं होता। गाँवों को आदर्श बनाने की बात उन्होने अपने उपन्यासों में बार–बार कही है।

प्रेमचंद ने देहात की दरिद्रता का सजीव और चित्रण आंकाहै। किसान के घर में न धातु के वर्णन है न बिस्तर और न ही खाट। बेचारे असहाय देहाती लोग और मृत्यु के दीर्घकालीन उदासीनता और परस्परागत शांति के साथ देखते रहते हैं ।वे इन विपदाओं और दूसरी बाधाओं को इस प्रकार सहते है,मानो ये अवश्यांभावी हो। सामाजिक रीति–रिवाज उन्हें भारी ऋण से जकड देते है। विवाह,जन्म,और मृत्यु के कुछ ऐसे अवसर है,अब उन्हें अपनी शक्ति से अधिक काम करना पडता है। वे साहुकारों से रुपाय उधार लेने को विवश होते हैं । वे ऋण चुकाने के लिए अपने जानवरों और अपने बर्तनों और अपने घर तक बेचने केलिए बाधित होते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार देहाती जीवन का चित्रण करते हुए प्रेमचंद ने लोगों को दो वर्गों में बांटा है|

शोषक और शोषितजनों

प्रेमचंद सुधार के ऐसे सुझाव पेश करते है जिनसे गरीब किसानों का भला हो सकता है। इन गरीबोम की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए लेखक गाँवों में औद्योगीकरण के पक्ष में नहीं है। उन्होने घरेलू उद्योग–धंधों मशीन द्वारा निर्मित वस्तु और विदेशी वसतुओं के बहिष्कार का समर्थन किया।

जीवन की आर्थिक समस्या पर अधिक बल दिया। उन्होने अपने उपन्यासों और कहानियों में इसलिए स्थान दिया कि इससे उत्साही मध्यवर्ग का ध्यान उन नई समस्याओं पर केन्द्रित हो जाए जो पूंजिवादि सभ्यता के कारण उत्पन्न हो गई थी। उन्होने अपना ध्यान प्रमुख रूप से भारतीय किसान पर केन्द्रित किया।

संदर्भ सूची

1. वरदान प्रेमचंद पृष्ट–80
2. रंगभूमि प्रेमचंद पृष्ट–280
3. वरदान प्रेमचंद पृष्ट–158
4. कर्मभूमि प्रेमचंद पृष्ट–03